–: प्राक्कथन :–

भारतीय शास्त्रीय संगीत को भारत का प्राण मानते है । यह कला अति प्राचीन है । इस परंपरा में अति प्राचीन काल में जाति गायन से लेकर आधुनिक राग गायन तक का ऐतिहासिक सफर विस्तृत एवं विशाल रहा है । यदि उस पर एक नज़र डालने जाए तो जाति वर्गीकरण, ग्राम राग वर्गीकरण, थाट राग वर्गीकरण, शुद्ध छांयालग संकीर्ण वर्गीकरण, मेल राग वर्गीकरण, राग–रागिणी वर्गीकरण, रागांग वर्गीकरण इस तरह अलग–अलग समय में उपर्युक्त पद्धतियाँ प्रचलित रही है ।

थाट राग वर्गीकरण पद्धति स्व. विष्णु नारायण भातखंडे जी द्वारा प्रचारित की गई । पं. भातखंडे जी ने वस्तुत: भारतीय शास्त्रीय संगीत की बिखरी सामग्री को न केवल संकलित करने का कार्य किया अपितु उसका अध्ययन, अनुशीलन, विश्लेषण पर भी ध्यान दिया । थाट राग वर्गीकरण पद्धति में संगीत समाज को एक व्यवस्थित क्रम मिला है जिसमें रागों को उसकी विशेषता, समय विशेषता और समय रस के आधार पर वर्गीकृत किया गया है । अनगिनत रागों को थाटों के अन्तर्गत विभाजित करके अध्ययन का तरीका आसान किया गया है ।

उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में थाट का एक विशिष्ट महत्त्व रहा है । थाट की उत्पत्ति से ७२ थाटों की संकल्पना के आधार पर उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में दस थाटों की रचना के आधार तत्त्वों को इस महा शोधनिबंध में समाहित करने का विनम्र प्रयास किया है । वर्तमान समय में १० थाटों के अंतर्गत रागों का वर्गीकरण किया गया है, जो संगीत परंपरा की बहुत बड़ी उपलब्धि है । १० थाटों के अंतर्गत बिलावल, कल्याण, खमाज, काफी, भैरव, पूर्वी, मारवा, तोड़ी, आसावरी एवं भैरवी थाट ज्ञात है । थाटों के विषय में अनेक मतमतांतर के साथ नवीन थाट रचनाओं का औचित्य प्राप्त होता है । उत्तर भारतीय संगीत में मुख्य १० थाट प्रचलन में है । वह थाटों में से मारवा थाट का एक पारंपारिक आधार तत्त्वों को समाहित करने

का प्रयास किया है । भारतीय संगीत श्रेष्ठ संगीत की भूमिका में विद्यमान है । इस महा शोधनिबंध में भारतीय शास्त्रीय संगीत में मारवा थाट की उत्पत्ति स्पष्ट की है, जिसमें मारवा थाट का स्थान, मारवा थाट की उत्पत्ति और विकास, मारवा थाट के जन्य रागों की उत्पत्ति के साथ ही मारवा थाट के रागों के बंधारण एवं रागों की थाट से उत्पत्ति स्पष्ट करने का शोधछात्राने प्रयास किया है और उनके प्रमुख तत्त्वों का विशिष्ट अध्ययन किया है ।

हर एक थाट–स्वर, राग में से उत्पन्न होनेवाले रस का अध्ययन प्रत्यक्ष या परोक्ष तरीके से अनुभव करते है । विभिन्न प्रबंधों में प्राचीन संगीत का इतिहास, प्राचीन संगीतकारों की जीवनीय, घराना पद्धति, थाट की बंदिशों का संग्रह, विभिन्न नायकों या घरानों की विशेष गायन शैली का अध्ययन इत्यादि विषय पर पाए जाते हैं । किन्तु थाट के अंतर्गत समाविष्ट साहित्य एवं बंदिशों के लिपिकरण का अध्ययन करने का प्रयास शोधार्थी द्वारा किया गया है ।

शोधार्थी के प्रबंध हेतु मारवा थाट के अंतर्गत आनेवाले प्रचलित एवं अप्रचलित रागों का विस्तृत वर्णन एवं विश्लेषण किया है । उन सभी रागों में विभिन्न गायन शैलीओं की चर्चा की है, साथ ही मारवा थाट के अंतर्गत समाविष्ट रागों की बंदिशों का अध्ययन भी किया गया है ।

इस विषय का मुख्य उद्देश्य उत्तर हिन्दुस्तानी शास्त्रीय गायन के मारवा थाट अंतर्गत समाविष्ट रागों का विशिष्ट अध्ययन करना हैं । शोधार्थी द्वारा यह प्रयास एक उपलब्धि की तरह होगा जो आनेवाले विद्यार्थीओं, संगीत साधकों, संस्थाओं आदि के लिए कारगर सिद्ध होगा ।